नको आरु न पारु, सुपेरियां जे सिक जो,
सुंवातीअ बिन सिप खे, अचे कीन करारु,
मछीअ जे मन में वसे, पाणी पिर आधारु,
सामी सिजणहारु, पलक पराहूं न थिए.

सामी साहब एक प्रेमी भक्त की मनोदशा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि प्रियतम परमेश्वर के प्रति मेरा (भक्त का) जो अथाह प्रेम है, उसका कोई अंत ही नहीं है। मैं उसका वर्णन करने में असमर्थ हूँ। मेरी दशा उस सीपी/सीप जैसी है, जिसको स्वाति नक्षत्र की वर्षा के बिना आराम/चैन/सुख नहीं मिलता। मछली के लिए भी पानी उसका प्राण-आधार होता है, जिसके बिना वह जी नहीं सकती है। इसी प्रकार सृजनहार परमेश्वर भी मेरे (भक्त के) प्राणों का आधार है, जो एक पल/क्षण के लिए भी मुझसे दूर न हो!

भक्ति का अर्थ प्रभु से नितांत प्रेम है। प्रेम ही भक्ति है या भक्ति ही प्रेम है। प्रियतम परमेश्वर को पाने के लिए प्रेम की ही आवश्यकता होती है। प्रेम तो भक्ति की आत्मा है। परमेश्वर स्वयं भी प्रेम ही है। परमेश्वर का दूसरा नाम प्रेम है। प्रभु को पाने के लिए पहला और अंतिम सोपान (सीढ़ी) प्रेम ही है। गोपियों ने श्रीकृष्ण से निश्छल, निर्मल और प्रगाढ़ प्रेम किया। वे श्रीकृष्ण के बिना एक पल भी जीवित नहीं रह सकती थीं। श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर तो उनकी दशा मरणासन्न हो गयी थीं। श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम ही उनके लिए भक्ति और मुक्ति थी। ऐसा ही प्रेम मीराबाई का था।

प्रभु से प्रेम कैसा होना चाहिए? सामी साहब कहते हैं कि यह प्रेम अनन्य और असीम होना चाहिए। ऐसे प्रेम में प्रभु-मिलन की आस होनी चाहिए, तड़प और बैचेनी होनी चाहिए। सामी साहब के विचारानुसार यह प्रेम सीपी और मीन (मछली) की भाँति होना चाहिए। सीपी स्वाति नक्षत्र की वर्षा के लिए बेचैन रहती है और मछली पानी के बिना जी नहीं सकती। सच्चे प्रभु भक्त की भी बेचैनी इसी प्रकार होनी चाहिए। सारी सृष्टि का निर्माणकर्ता परमेश्वर भी अपने प्रिय भक्तों का प्राण-आधार होता है। बेचैन भक्त की पुकार सुनिए-

केहू भाँति कृपा सिंधु मेरी ओर हेरिये।
मोको और ठौर न, सुटेक एक तेरिये।।

(विनय-पत्रिका)

■